


जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) नई दिल्ली, इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायोटेक्नोलॉजी (ICGEB) नई दिल्ली, ट्रांस-डिसिप्लिनरी हेल्थ साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय (TDU), बेंगलुरु और केंद्रीय आयुर्वेद विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS), आयुष मंत्रालय के बीच आज एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए गए जिसके अंतर्गत एक अनुसंधान परियोजना को चलाया जाएगा जिसमें सिस्टम बायोलॉजी दृष्टिकोण द्वारा स्वस्थ मनुष्यों में प्रकृति के आणविक हस्ताक्षरों का परिसीमन किया जाएगा "

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान ने बताया कि यह सी.सी.आर.ए.एस. द्वारा संचालित यह एक अनूठी अनुसंधान परियोजना में से एक है। उन्होंने आयुर्वेदिक और समकालीन दोनों चिकित्सा प्रणालियों के साथ समग्र दृष्टिकोण अपनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। यह परियोजना जो आयुर्वेदिक प्रकृति के आणविक हस्ताक्षरों के परिसीमन की परिकल्पना करती है, इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास होगी। यह परियोजना न केवल वैयक्तिकृत चिकित्सा (Personalised medicine) के क्षेत्र में नए ज्ञान को जोड़ेगी बल्कि क्षेत्र में अनुसंधान के लिए नई दिशाएं भी प्रदान करेगी। इसलिए, वर्तमान परियोजना नए ज्ञान को जोड़ने के साथ ही भावी अनुसंधानों के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

जे.एन.यू. के कुलपति प्रो. एम. जगदीश कुमार ने आयुर्वेदिक ज्ञान को समझने और इसे सामाजिक लाभ के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य बनाने के लिए समकालीन तकनीक जैसे बहु-ओमिक्स और संगणक तकनीकों (Multi-omics and Computational Technologies) का उपयोग करने पर बल दिया। इस संबंध में उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि वर्तमान सत्र से जे.एन.यू. में आयुर्वेद जीवविज्ञान एक नया एकीकृत स्नातक-स्नातकोत्तर (Integrated B.Sc.-M.Sc.) पाठ्यक्रम शुरू हो चुका है। डॉ. दिनाकर एम. सालुंके, निदेशक, आइ.सी.जी.ई.बी. (ICGEB), नई दिल्ली ने सटीक कल्याण के लिए समकालीन नैदानिक विज्ञान के साथ आयुर्वेद ज्ञान को एकीकृत करने की आवश्यकता की वकालत की।

प्रो. राणा प्रताप सिंह, प्रति-कुलपति (Rector) जे.एन.यू., जो एक प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक हैं, इस बहु-संस्थागत अनुसंधान दल का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने इस परियोजना की मुख्य विशेषताओं की जानकारी प्रदान की जिसमें सभी प्रकृति के विभिन्न आणविक हस्ताक्षर जैसे प्रोटीन (Proteins), जीन प्रतिलेखन (Transcripts), चयापचयों (Metabolites) और सूक्ष्म-जीवाणुओं (Microbiota) का अध्ययन वर्ष के दोनों अयानों में किया जाएगा। अत्याधुनिक तरीकों और तकनीकों का उपयोग कर परिसीमन किया जाएगा। इससे पहले प्रो. रूपेश चतुर्वेदी ने आधुनिक नैदानिक प्रणाली में आयुर्वेद की भूमिका के बारे में जानकारी दी। प्रो. अरुण एस. खरात ने अतिथियों का स्वागत किया और डॉ. नील सरोवर भवेश ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कार्यक्रम का समन्वयन प्रो. सुनील कटेरिया, निदेशक, अनुसंधान एवं विकास, जे.एन.यू. द्वारा किया गया। इस समझौता ज्ञापन के तहत विकसित बौद्धिक संपदा को चारों संस्थाओं (CCRAS, JNU, ICGEB और TDU) द्वारा संयुक्त रूप से साझा किया जाएगा।


प्रो. राणा प्रताप सिंह,
कुलदेशिक (Rector)

JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY

Press Note

16 February 2021


A quadripartite MoU was signed today between Jawaharlal Nehru University (JNU) New Delhi, International Centre for Genetic Engineering and Biotechnology (ICGEB) New Delhi, The University of Trans-Disciplinary Health Sciences and Technology (TDU), Bengaluru and Central Council for Research in Ayurveda Sciences (CCRAS), Ministry of AYUSH, Govt of India for a multi-institutional collaborative research project on “Systems Biology approach to delineate molecular signatures of Prakriti in healthy humans”.

Speaking on the occasion Prof. Vd. Kartar Singh Dhiman told the audience that this is one of the unique research project undertaken by CCRAS. He highlighted the importance of taking a holistic approach combining both Ayurvedic and contemporary medicine systems. This project which envisages delineation of its molecular signatures will go a long way in this direction. The project will not only add new knowledge to the domain of personalized medicine but also initiate new vistas for research in the area. Hence, the current project can take shape of exploratory research for adding new domain knowledge.

Prof. M. Jagadesh Kumar, the Vice-Chancellor, JNU, emphasized on role of using contemporary technology such as multi-omics and computational techniques to understand the Ayurvedic knowledge and making it universally acceptable for societal benefits. In this regard he also mentioned that a new course integrated M.Sc. course in Ayurveda Biology has already started in JNU from the current session. Dr. Dinakar M. Salunke, Director, ICGEB, New Delhi advocated the need of integrating Ayurveda knowledge with contemporary clinical sciences for precision wellness. Prof. Rana P. Singh, Rector, JNU, a life scientist who is leading the multi-institutional research team detailed the salient features of the project in which the molecular signatures such proteins, transcripts, metabolites and microbiota of different *prakritis* in both *aayans* will be delineated using state-of-the art methodologies and technologies.

Earlier Prof. Rupesh Chaturvedi provided information on the role of Ayurveda in modern clinical practice. Prof. Arun S. Kharat welcomed the guests and Dr. Neel Sarovar Bhavesh proposed the vote of thanks. The program was coordinated by Prof. Suneel Kateria, Director, R&D, JNU.

Intellectual property developed under this MoU shall be shared jointly by CCRAS, JNU, ICGEB and TDU.


16/02/2021
Prof. Rana Pratap Singh
Rector